नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य
(Aims of teaching Civics)

प्रश्न - नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का वर्णन करें
Describe the Aims of teaching Civics

Unit II इनमें से एक प्रश्न पूछा जायेगा

(2) हाईस्कूल स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं? विवेचना कीजिए । DSPMU - 2018
What are the Aims of teaching Civics at High School Stage?

OR, अथवा

— माध्यमिक स्तर पर नागरिक शास्त्र शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य बताइए । इन उद्देश्यों के प्राप्ति हेतु क्या किया जाना चाहिए ?
डी एस पी एम यू - 2016
Bring out major Aims of teaching Civics at secondary stage. What should be done to achive these Aims.

OR, अथवा

— विद्यालय में नागरिकशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं? इसको पढ़ाने में छात्रों में किन-किन गुणों का विकास सम्भव है ?
What is the purpose of teaching Civics in School? What values can be developed in the pupils through its teaching? DSPMU-2017

OR-

— उच्च माध्यमिक स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के क्या उद्देश्य हैं स्पष्ट करें ? (+2 Level का उद्देश्य है)
Explain what is the Aims of teaching Civics at senior Secondary level.

आगे पेज पर भी है

संसार का प्रत्येक कार्य किसी न किसी उद्देश्य को सामने रख कर लिया जाता है। जिस कार्य का कोई उद्देश्य ही नहीं होता वह कार्य ही व्यर्थ रहता है। शिक्षा के विषय में भी यही बात सत्य है। उद्देश्य रहित शिक्षा या उद्देश्य रहित शिक्षक दोनों ही समाज के किसी काम के नहीं हैं। प्रो० भाटिया ने ठीक ही लिखा है, "उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शिक्षक उस नाविक के समान है जो अपने लक्ष्य या मंजिल को नहीं जानता है और बालक उस पतवारविहीन नौका के समान है जो लहरों के थपेड़े खाकर किसी तट स्थल पर जा लगेगी।"

"Without the knowledge of aims, the educator is like a sailor who does not know his goal or his destination and the child is like a rudderless vessel which will be drifted along some where ashore."

—Prof Bhatia

जो बात सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था के विषय में सत्य है वह नागरिकशास्त्र के विषय में भी सत्य है। जब तक नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को सामने नहीं रखा

Scanned with CamScanner

जायगा तब तक उसके शिक्षण का कोई भी महत्व नहीं रहेगा। यहाँ यह प्रश्न बरबस उठता है कि नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को निर्धारित करने वाले कौन-कौन से साधन हैं। वास्तव में नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों का निर्धारण नागरिकशास्त्र शिक्षक और छात्र आदि मिलकर करते हैं। अर्थशास्त्रियों, समाचार-पत्रों और राजनीतिज्ञों आदि का भी इस दिशा में योगदान रहता है। इन उद्देश्य का शिक्षार्थी इन दो का विशेष महत्व रहता है। नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य का निर्धारण इस प्रकार किया जाना चाहिये कि वह सामाजिक रूप से मान्य हों, और जो विद्यालय और छात्रों दोनों को स्वीकार हों और जो छात्रों को एक निश्चित दिशा प्रदान करने वाले हों। सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप ही नागरिकशास्त्र शिक्षण का उद्देश्य होना चाहिये तथा उनकी प्राप्ति में छात्र और अध्यापक दोनों मिलकर प्रयास करें।

विभिन्न विद्वानों ने नागरिकशास्त्र शिक्षण के दो उद्देश्यों का वर्णन किया है परन्तु इन सभी उद्देश्यों को एक साथ मिलाकर हम कह सकते हैं कि नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्यों सुयोग्य नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रमुख करना है। बाइनिंग और बाइनिंग लिखते हैं, "नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य अच्छे नागरिक पैदा करना तथा छात्रों की इस प्रकार सहायता करना है जिससे उनमें नागरिक चरित्र का विकास हो।"

इस उद्देश्य की प्राप्ति के हेतु छात्रों की समाज एवं शासन-व्यवस्था का सम्पूर्ण ज्ञान प्रदान करना आवश्यक है। इन्हीं लेखकों ने नागरिकशास्त्र के लक्ष्यों का वर्णन करते हुये आगे लिखा है, नागरिकशास्त्र के शिक्षण के द्वारा नागरिकों को इस योग्य बना दिया जाय कि वे सामाजिक समस्याओं की जटिलताओं को समझ सकें और उनके समाधान में महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।"

"To get pupils to view in a right way, certain pressing civic problems, in order that they may do their part in solving these problems, should constitute an outstanding objective"

इस प्रकार स्पष्ट है कि सुयोग्य नागरिकों के निर्माण के साथ ही इस शास्त्र का उद्देश्य समाज का उत्थान भी है। एडम वेस्ले ने नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्यों का उल्लेख किया है :—

(1) बालकों में सरकार की आवश्यकता को समझने की शक्ति प्रदान करना।

(2) सरकार के सम्पूर्ण ढाँचे अवगत करना।

(3) राजनीतिक दलों तथा उनके कार्य-कलापों से बालकों को परिचित कराना।

(4) राष्ट्रों के सहयोग के महत्व को समझाना।

(5) नागरिक के अधिकार एवं कर्तव्यों से बालकों को अवगत कराना।

(6) प्रजातन्त्र सरकार में बालकों के विश्वास को दृढ़ता प्रदान कराना।

(7) जनहित, मानव-कल्याण एवं विश्व-शान्ति की भावना को दृढ़तर बनाना एवं शिक्षक के शिक्षण का प्रधान लक्ष्य होना चाहिये।

(8) बालक को इस योग्य बनाना कि वह राजनीतिक समस्याओं को सुलझा सके और उनको भली-भाँति समझ भी सके।

Scanned with CamScanner

(9) बालक स्थानीय, राजकीय एवं संघीय सरकारों को भली प्रकार समझ सकें।

(10) नागरिक के क्या उत्तरदायित्व हैं और उनके निर्वाह का क्या महत्व है आदि बातों का सम्यक् ज्ञान कराना इस शास्त्र के शिक्षण का उद्देश्य होना चाहिये।

(11) इसके द्वारा उनमें सहयोग, सहानुभूति, प्रेम एवं सहकारिता की भावनाओं को विकसित करना।

नागरिकशास्त्र शिक्षण के विभिन्न उद्देश्य

यहाँ हम नागरिकशास्त्र शिक्षण के विभिन्न उद्देश्यों की चर्चा संक्षेप में कर रहे हैं :—

(1) **आदर्श नागरिकता का विकास**—नागरिकशास्त्र के शिक्षण का सबसे अधिक महत्वपूर्ण लक्ष्य यह होना चाहिये कि इसके शिक्षण द्वारा बालकों में आदर्श नागरिक के गुणों का विकास किया जाय। आदर्श नागरिकता प्रजातन्त्रीय शासन की मूल होती है। इसको विकसित करना इस विषय विशेष के शिक्षण का लक्ष्य होना चाहिये। नागरिकों को अपने कर्तव्यों का पूर्ण एवं सम्यक् ज्ञान होना चाहिये। बिना कर्तव्यों के पालन के प्रजातन्त्र सफल हो ही नहीं सकता। इसी के साथ ही अधिकारों का भी उपयोग आवश्यक है किन्तु इनका उपयोग ऐसा होना चाहिये जिनसे दूसरों का शोषण न हो सके। अधिकारों के उपयोग का यह आशय कदापि न होना चाहिये कि दूसरों के अधिकारों का शोषण किया जाय अथवा उनको कुचल दिया जाय। बालकों में जियो और जीने दो (Live and let others Live) के अधिकारों की रक्षा कर उनके प्रति आदर भाव रखें।

(2) **उच्च-कोटि के चरित्र का निर्माण**—प्रो० बाइनिंग और बाइनिंग ने नागरिकशास्त्र के शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य बताया है, "नागरिकशास्त्र शिक्षण का प्रमुख उद्देश्य अच्छे नागरिक पैदा करना तथा छात्रों की इस प्रकार सहायता करना है जिससे उनमें नागरिक चरित्र का विकास हो।"

"The outslanning purpose of instruction in Civics is to Produce better citizeus and to aid pupils in the formation of a higher type of civic character." —Bining & Bining

इस उद्देश्य का तात्पर्य बालक विभिन्न शासकीय साधनों जैसे स्थानीय राजकीय तथा संघीय सरकारों का पूर्ण ज्ञान प्राप्त करे। इसका ज्ञान इसलिये आवश्यक है कि भविष्य में आज के ही बालक शासन के कर्णधार होंगे। फलतः इस रूप से ही राजकीय कार्यों का सम्यक् संचालन करने में समर्थ हो सकेंगे। इन साधनों का स्थायित्व केवल समाज कल्याण एवं जनहित के ही दृष्टिकोण से है। यदि इनके द्वारा इन उद्देश्यों की प्राप्ति नहीं हो सकती तो वे निस्सार हैं।

(3) **राजनीतिक जागरूकता एवं कौशल**—नागरिकशास्त्र का शिक्षण ऐसा होना चाहिये कि बालकों में राजनीतिक चेतना का आविर्भाव हो। वर्तमान छात्र ही कल के शासनाधिकारी होंगे। समाज एवं राज्य का सम्पूर्ण भार उन्हीं पर होगा। उन्हें ही उनकी बागडोर सम्हालनी होगी। अतः उनमें राजनीतिक सक्रियता

Scanned with CamScanner

का होना नितान्त आवश्यक है। यह राजनीतिक जागरूकता भी तभी उत्पन्न की जा सकेगी जब कि बालकों को नागरिक के अधिकारों एवं कर्तव्यों से पूर्ण परिचित करा दिया जाय। उनको यह भली-भाँति समझा दिया जाय कि शासन उनका है और वे शासन के हैं। प्रजातन्त्र की सफलता व विफलता के वे ही उत्तरदायी हैं। शिक्षक को चाहिये कि वह ऐसी क्रियाओं का संगठन करे जिससे कि छात्रों में राजनीतिक व्यावहारिकता उत्पन्न हो सके।

(4) **सामाजिक जटिलताओं को समझने की योग्यता का विकास**—जैसे-जैसे सभ्यता का विकास होता जा रहा है और उद्योगों की उन्नति होती जा रही है वैसे-वैसे सामाजिक व्यवस्था एवं समस्याएँ जटिल होती जा रही हैं। गाँवों की आबादी घटती जा रही है, नगरों की आबादी बढ़ती जा रही है। नये नये सामाजिक संस्थाओं और नये नये संघों का निर्माण होता जा रहा है, प्राचीन परम्पराएँ ध्वस्त होती जा रही हैं और नये सामाजिक जीवन का सूत्रपात हो रहा है। इन परिस्थितियों में सामाजिक व्यवस्था की जटिलता को समझना एक अत्यन्त कठिन कार्य है। नागरिकशास्त्र का उद्देश्य छात्रों में इन जटिलताओं को समझने की क्षमता उत्पन्न करना है। यह शास्त्र छात्रों को इस योग्य बनाता है कि वे वर्तमान समाज की विभिन्न जटिलताओं को समझ सकें, उनके समाधान हेतु प्रयास करें और समाज के उत्थापन में अपना योगदान दें।

(5) **राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास**—नागरिकशास्त्र के शिक्षण का एक लक्ष्य यह भी होना चाहिये कि छात्रों के दृष्टिकोण को राष्ट्रीय बनाया जाय अर्थात् वे जो कुछ भी सोचे और जो कुछ भी करें वह सब राष्ट्र को दृष्टि में रखते हुए। उनके चरित्र का भी निर्माण ऐसा होना चाहिये जो राष्ट्रीयता से ओत-प्रोत हो। वे अपने चरित्र को ऐसा संगठित करें कि आगामी पीढ़ी उनके चरित्र को आदर्श मान कर उनका पश्चाद्गमन करें। राष्ट्रीय चरित्र वह जिसमें कि नागरिक अपने सम्पूर्ण चारित्रिक गुणों का उपयोग राष्ट्रोन्नति के लिये करे। शिक्षक को चाहिये कि वह प्रारम्भिक अवस्था में ही बालकों में चारित्रिक गुणों का विकास अपने प्रभावशाली शिक्षण द्वारा करे। बालकों को यह समझा देना चाहिये कि सम्पूर्ण मानव-समाज उनका परिवार है, सम्पूर्ण वसुन्धरा उनका कुटुम्ब और सम्पूर्ण जन-कल्याण ही उनका अपना कल्याण है।

(6) **बौद्धिक शक्तियों का विकास**—नागरिकशास्त्र के शिक्षण द्वारा छात्रों के दृष्टिकोण को इतना विकसित कर दिया जाय कि उनमें लेशमात्र भी संकीर्णता शेष न रह जाय। संकीर्ण मानव मस्तिष्क मनुष्य में कूपमंडूकता की प्रवृत्ति को जन्म देता है। वह अपने अलावा किसी अन्य की बात कभी सोचता ही नहीं है। वास्तव में चाहिये क्या? बालकों में विश्व-बन्धुत्व, विश्व-प्रेम एवं विश्व-कल्याण की भावना को विकसित करना। वे सब भी सोचे तो सम्पूर्ण मानव-जगत् की बात। वे जब भी बात करें तो सम्पूर्ण विश्व के हित में और वे जो भी कार्य करें तो समस्त मानव-कल्याण के हितार्थ।

(7) **शासन के स्वरूप का ज्ञान**—नागरिकशास्त्र शिक्षण का एक उद्देश्य छात्रों के स्वरूप से अवगत कराना भी है। इसके लिये छात्रों को संघीय, राज्यीय और स्थानीय तीनों स्तरों के ढाँचे का ज्ञान कराया जाना चाहिये साथ ही उनके

Scanned with CamScanner

प्रति छात्रों के क्या कर्तव्य हैं, इसका ज्ञान भी छात्रों को कराया जाना चाहिये। इन कर्तव्यों का निर्वाह किस प्रकार किया जाय और इसका क्या परिणाम निकलेगा, यह बातें भी छात्रों के सन्मुख स्पष्ट कर दी जायं।

(8) **आदर्श नेतृत्व का विकास** – प्रत्येक देश की उन्नति में वहाँ के नेतृत्व का बहुत बड़ा हाथ होता है। नागरिकशास्त्र शिक्षण के द्वारा छात्रों में आदर्श नेतृत्व के गुणों का विकास किया जाना चाहिये। आदर्श नेतृत्व आशावादी, ईमानदार, दयालु और सहयोगी होता है और देश एवं समाज के कल्याण के हेतु निरन्तर प्रयास करता है। नागरिकशास्त्र के शिक्षण के माध्यम से छात्रों को आदर्श नेता बनाने हेतु प्रयुक्त किया जाना चाहिये। आदर्श नेतृत्व के निर्माण में नागरिकशास्त्र का विशेष योगदान होता है।

(9) **वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास**— वैज्ञानिक दृष्टिकोण का आशय यहाँ पर सुव्यवस्थित एवं सार्थक दृष्टिकोण से है। बालकों के दृष्टिकोण में व्यवस्था, क्रमिकता एवं क्रमबद्धता को लाना इस विषय के शिक्षण का लक्ष्य होना चाहिये। विचारों में संकीर्णता एवं अन्धविश्वास को कदापि न आने देना चाहिये। शिक्षक को चाहिये कि वह उनके (छात्रों) के मस्तिष्क को ऐसा मोड़ दे कि उनका मस्तिष्क सार्थक क्रियाशीलता की ओर उन्मुख हो जाय।

विभिन्न स्तरों पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य (लक्ष्य)
(Aims of teaching Civics at different stages of study)

ऊपर हमने नागरिकशास्त्र शिक्षण के प्रमुख उद्देश्यों का उल्लेख किया है। यहाँ हमारे लिये यह भी आवश्यक हो जाता है कि हम शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर इस शास्त्र शिक्षण के उद्देश्यों को जानें।

(1) **प्राथमिक स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य**—प्राथमिक कक्षाओं में कक्षा 1 से 5 तक आते हैं। इस स्तर पर छात्र विशेष रूप से कहानी सुनना पसन्द करते हैं। इनकी आयु ऐसी होती है कि उन्हें सरलता से प्रभावित किया जा सकता है और इस समय छात्रों में जिन आदतों और गुणों का विकास किया जाता है वह उनके भावी जीवन की आधारशिला बन जाती है। इसी स्तर पर नागरिक-शास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिये—

(क) छात्रों में चारित्रिक गुणों का विकास करना। इसके हेतु विभिन्न प्रकार की काल्पनिक और वास्तविक कहानियों का आश्रय लिया जा सकता है। कहानियों के पात्रों को चारित्रिक गुणों से युक्त दिखलाया जाना चाहिये और इससे छात्रों में चारित्रिक गुणों का विकास होता है।

(ख) छात्रों में अच्छी आदतों का निर्माण जिससे कि वे अनुशासित जीवन व्यतीत करना सीख सकें।

(ग) छात्रों में देश-प्रेम और राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना। इसके लिये भी देश-भक्ति से युक्त कहानियों का आश्रय लिया जा सकता है।

(घ) छात्रों में अन्तर्राष्ट्रीय भावना के विकास के हेतु पृष्ठभूमि तैयार करना। इसके हेतु छात्रों को ऐसे महापुरुषों की कहानियाँ सुनाई जायें जिन्होंने मानव जाति के कल्याण आदि के लिये अपना सर्वस्व अर्पित कर दिया।

Scanned with CamScanner

(ङ) छात्रों को स्थानीय संस्थाओं, नेताओं से अवगत कराना।

(च) छात्रों में मानसिक शक्तिकों, नेताओं से अवगत कराना।

(2) **माध्यमिक स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के उद्देश्य**—माध्यमिक स्तर के छात्रों को मानसिक शक्तियों का बहुत सीमा तक विकास हो चुका होता है और वे वास्तविकता में अधिक आस्था रखते हैं। अतएव इस स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिये—

(क) छात्रों में नागरिक गुणों का विकास करना।

(ख) क्षात्रों में शासन के स्वरूप से अवगत कराना।

(ग) छात्रों के दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बनाने का प्रयास करना।

(घ) छात्रों में राष्ट्रीयता एवं अन्तर्राष्ट्रीयता एवं सद्भावना का विकास करना।

(ङ) छात्रों की स्थानीय स्वशासन से भलीभाँति परिचित कराना।

(च) छात्रों को अपने देश की प्रमुख सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक समस्याओं से अवगत कराना।

(छ) छात्रों की मानसिक शक्तियों का विकास करना।

(ज) छात्रों में चारित्रिक गुणों का विकास करना और उन्हें अनुशासित जीवन बिताने के लिये प्रेरित करना।

(3) **उच्चतर माध्यमिक स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण का उद्देश्य**—उच्चतर माध्यमिक स्तर पर छात्रों का शारीरिक, सामाजिक सभी दृष्टि से विकास हो चुका होता है और उनमें स्वयं निर्णय लेने की क्षमता हो चुकी होती है। इस स्तर के बालक तर्क की कसौटी पर आलोचनात्यक ढग से किसी तथ्य को ग्रहण करते हैं। अतएव इस स्तर पर नागरिकशास्त्र शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिये—

(क) छात्रों में नागरिक कुशलता उत्पन्न करना और उन्हें समाज सेवा हेतु प्रेरित करना।

(ख) छात्रों को नागरिक कर्तव्यों और अधिकारों से भलीभाँति परिचित कराना।

(ग) छात्रों में राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना की भावना को दृढ़ करना।

(घ) छात्रों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण को परिपक्व बनाना और उन्हें सत्य एवं असत्य को स्वयं जानने के हेतु प्रेरित करना।

(ङ) छात्रों को स्वतंत्र चिन्तन करने का अवसर प्रदान करना।

(च) छात्रों को देश की सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक समस्याओं से अवगत करा कर उनके समाधान के हेतु प्रेरित करना।

(छ) छात्रों में चारित्रिक गुणों का विकास करना और व्यावहारिक जीवन में आदर्श चरित्र प्रस्तुत करने के हेतु उन्हें प्रेरित करना।

Scanned with CamScanner

(ज) छात्रों को शासन के सभी प्रकार के रूपों से परिचित कराना और उन्हें लोकतन्त्रीय जीवन के ढंग से परिचित कराना।

(झ) छात्रों को लोकतंत्रीय जीवन व्यतीत करने का अवसर प्रदान करना।

(ञ) छात्रों में विभिन्न राजनीतिक दलों के कार्य-क्रमों आदि का ज्ञान प्रदान करना।

(ट) छात्रों में नेतृत्व के गुणों का विकास करना।

Scanned with CamScanner